क्षणप्रभा

क्षणप्रभा

शिव कुमार झा “टिल्लू”

ISBN : 978-93-8.538-32-7

मूल्य: भा. रु.200/-
पहिल संस्करण : 2012.

श्रुति प्रकाशन रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११)२५८८९६५७
Website:http://www.shruti-publication.com
e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com
Printed at: Ajay Arts, Delhi-11...2
टाइप सेट- आशीष चौधरी
Distributor : Pallavi Distributors, Ward no- 6, Nirmali (Supaul), मो.-957245.4.5, 9931654742
Kshanaprabha: Anthology of Maithili Poems by Shiv Kumar Jha 'Tillu'

समर्पण

अपन छोटका कक्का
स्व. नवलकान्त झाक
चरण रजमे सादर समर्पित।

आमुख

''क्षणप्रभा''क अर्थ होइछ बिजरी जेकरा प्रबुद्ध जन तड़ित कहैत छथि। हम कोनो नैसर्गिक कवि नै, क्षणिक भावना कविताक रूपेँ अभिव्यक्त भेल जेकर प्रासंगिकताक निर्णए पाठकगणपर छन्हि।

हमर कहब मात्र ईएह जे हमर ई पहिलुक प्रयास थिक ऐमे काव्य लक्षणा ओ व्यंहजनाक अनुपालन भेल वा नै ऐ विषयमे हम किछु नै कहि सकैत छी, मात्र ईएह कहबाक लेल नीति संगत हएत जे जइ भाषाकेँ बाल कालहिसँ हिआमे लगा कऽ रखलौं ओइ भाषामे अपन किछु अभिव्यक्ति पाठकगण लग परसि रहल छी। हमर जन्म मातृक मालीपुर मोड़तरमे भेल, हाशमीजी ओइ गामक बगलमे शिक्षक छला, मालीयेपुर गाममे रहै छला, हमर बाबूजी स्व. कालीकान्त झा बूच सँ साहित्य साधनाक क्रममे बड्ड अन्तरंगता भऽ गेल छलनि, पारिवारिक सम्बन्ध जकाँ। हमर बाल्यकालक उपनाम "टिल्लू" हिनके राखल छलनि, जखन हम नेना छलौं (४-५ बर्खक) तँ ओ हमरा कहै छला- "टिल्लू मियाँ राही, पेटमे कराही, आ दौड़ऽ हौ सिपाही"। माए चन्द्र कला देवी सेहो मैथिलीमे किछु पद्य लिखने छलीह। बालकाल मातृकमे बीतल, तकर बाद पैतृक गाम उदयनाचार्यक भूमि करियनक माटि-पानिमे रमि आगाँ बढ़ैत गेलौं। पिताक कवित्वक कारणेँ महाकवि आरसी, चन्द्रभानु सिह, प्रवासी, प्रो. नरेश कुमार विकल, प्रो. विद्यापति झा, प्रो. राम कृपाल चौधरी राकेशसँ परिचय भेल। तकर परिणाम थिक ई छोट-छीन कृति।

धन्यवादक पात्र छथि श्रुति प्रकाशनक संग-संग गजेन्द्र ठाकुर आ उमेश मण्डल जिनकर सानिध्यमे ई झुझुआन रचना संकलन मैथिलीक पटल सोझाँ आएल। संग-संग डॉ. शेफालिका वर्मा, श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरी सन प्रवीण साहित्यकार सेहो धन्यवादक पात्र छथि जनिक उत्साहवर्द्धनक कारण ई पोथी अपनेक हाथमे विचार करबाक लेल उपस्थित अछि।

सादर

शिव कुमार झा ''टिल्लू''

ऋतुराज मे विरहिनी

पिया कोना कऽ बिततै फागुन मास अपार औ,

जीवन भेल पहाड़ औ ना ..... ।

कोइली कुहकै ठाढ़ि पात

होइछ मन मे अघात

एकसरि डूबि रहल छी, अहीं बिनु हम मझधार औ

जीवन भेल पहाड़ औ ना ..... ।

भ्रमरक गुंजन लागय तीत,

केहेन निष्ठुर भेलहुँ मीत

कोना कऽ सूखि सकत ई फूटल अश्रुधार औ,

जीवन भेल पहाड़ औ ना ..... ।

सखी सभ सदिखन अछि कवदाबय,

बिछुरन रोदन लऽ कऽ आबय

बिहुंसल यौवन पसरल मेघ आ अभिसार औ,

जीवन भेल पहाँड़ औ ना ..... ।

देखिते अबीर गुलालक रंग

विरह बनौलक कलुष उमंग

कहू कोना उठत ई मृत शय्याक कहार औ,

जीवन भेल पहाड़ औ ना ..... ।

कंतक आवाहन

आजु मुदित मन बालारूण केर - करू मंगल गुणगान अय ।
जड़ उपवन मे सुमन फुलाओल यौवन महमह भान अय ।
श्रैंगारिक वेला मे सपनहिं
प्रियतम छूलनि कपोल हमर ।
अर्द्ध निन्न मे चिहुँकल जहिना,
सासु मरोड़लि लोल हमर ।
अभिनव औता आजु सुनल दुरभाष मे अपने कान अय ।
जड़ ....

झट उठि देखल धर्म मातृ केर,
आनन परिमल पुष्प बनल ।
पूत दर्शनक आश मे डूबलि,
मंजुल मुसकी पनकि रहल,
चलू रम्भा भंडार चढ़ाबू हेता भुखल अहँक परान अय ।
जड़ ....

असमंजस मे दुहु भैरवी,
मातृक लोचन सुधा भरल ।
वामा हम तऽ नेहक लुत्ती,
तनय अनल प्रेम धधकि रहल ।
जननी हृदय छोह सँ आकुल स्वार्थहि हमर जहाँन अय ।
जड़ ....

चरण छूबि नाथक माता केर,
कयलहुँ चटपट स्नान हम ।
कुमकुम केसर जूही चमेली,
कुलदेवी गमगम अनुपम ।
देवकी नन्दन बंसी बजाबथु बोरि - बोरि द्राक्षा तान अय
जड़ ....

संभवि अहाँ ननदि नहि अनुजा,
बनि कम कयलहुँ ताप हमर ।
नहि तऽ फँसि विरहक संतापे,
पीवि लेतहुँ कखनहुँ जहर ।
आनव उपहारे मे अहीं लेल विज्ञ, धान्यवर चान अय
जड़ ....

अतृप्त नयन
आकुल पड़ल विगलित नभ दिशि तकैत,

छलहुँ रैनि केर निर्वाणक प्रतीक्षा करैत ।
कोना काटव एहि संतापी जामिनी कें,
ओ तऽ छलीह हमरे कटैत ।
झकझोड़ि देलक अन्तर्मन कें
नयनाक पूछल अंतिम प्रश्न-
अहूँ अहिना करब की?

पददलित कयलक विष रहित फन कें ।
दुहू नैन नोर सँ सरावोरि,
देलनि हमर आत्मा कें मडोरि ।
निःछल करूणामयी भऽ भाव विभोर
देखऽ लगलहुँ अवलाक धधकैत ज्वार
सुनैत गेलहुँ सुनैत गेलहुँ ।
निरूत्तर हमर व्यथा क्षीण भऽ गेल -
मंच सँ नेपथ्य भरिगर लागल
की सोचैत छलहुँ ? वास्तविकता............
चाननक सेज पर पड़लि अर्धांगिनी
धान्य, रजत, कांचन, भरल..........
मुदा ! सदिखन खसैत् वेदना केर दामिनी ?
छल अपूर्ण यौवन अतृप्त नयन
हा ! तात कोना कएल वरन
एक गाही वयसक सुकन्या केर
कंतक वयस पचपन..... ।
गामक चुलबुली मोनालिसा
कुहरि रहलि कनक गृह मे -
असहाय तातक देल विपदा कें
भोगि रहलि जोगि रहलि ।
कोना पार करती लछिमन रेखा -
अपन विंहुसल हिलोर कें
कतऽ करतीह प्रस्फुटित
हमरा सँ कयलीह अपन पीड़ा प्रकट

पाषाणी नर कऽ देलनि जीवन विकट
बूढ़ कंतक डोलि गेल आसन
शंकाक अजगर तोड़ि देलक प्रीति स्तंभ
कठोर आदेश देलनि अपन दारा कें -
आजुक पश्चात् पर पुरूष सँ गप्प
कथमपि नहि करब
नहि तऽ ?
हऽम अचंभित सुन्न शिथिल
कलंकित चरित्र लऽ कऽ
धूरि गेलहुँ निःतरंग अपन पुरान पथ पर
कॉपि रहल दुहु पग ....
कोन अपराध कयलहुँ
हऽम तऽ छलहुँ पोछैत नोर ।
अतृप्त नयन सँ झहरैत नोर ।

कुरूक्षेत्र मे राधा

नवनीत अहाँ पतवार बनू एहि करूस सरोवर जीवन कें,
ठिठुरल कदम्ब जमुना ठहरल सखी हँसी उडाओल अर्पण कें ।

आक्रांतित चहुँ दिशि सुमन तरू,
विकल जड़ चेतन नभ धरती,
जल बुन्न बनल घन घनन घटा,
त्रासित राधा मन अछि परती ।
नवनीत...............

सत् असत कर्म बीचि घूमि रहल,
सभ जनितो अहाँ अनजान बनल,
भेंटत की जन संहारे सँ,
अवला चित्कार आ नोर भरल ।
नवनीत...............

शापित करती ओ हिन्द सती,
जनिक नाथ लुप्त भू आंचल सँ,
संगहि करूणित वृन्दा - मथुरा,
लेब पाप सभक युद्ध मॉचत जॅ,
नवनीत...............

खोलू रण कर्मक डोरा डोरि,
डुबू पीयूष राधा - रस मे,
उत्ताप प्रेम तिल सुनगि रहल
नहि आब ई यौवन अछि वश मे
नवनीत...............

मधु श्रावणी

मधुप विना सुन्न उपवन रे, मधुश्रावणी आयल ।
कंत विनय विवश कतऽ रे हिय 'आरती' हेरायल ।

सुनू शिव छलिया स्वांगी बनि हमरा विरहय लहुँ,
संग महादेव नाम देवर कें कलंकित कयलहुँ
मधुप ....

हम कएल कतेक अनुग्रह रे अहूँ हमरा वचन देल,
मंजुल मिलन कतऽ गेल रे, कतय बात कलित गेल,
मधुप ....

हऽम अभागलि मैथिली रे, अपनहि देल घात,
नुपूर खनकि दुःख कातर रे, तोड़ल दामिनी गात,
मधुप ....

विकल मल्हार सुनि शिव, आनन हँसी सँ उमड़ायल,
जुनि हहरू सिये, अहँक लखन रघुवर संग आओल,
मधुप ....

बरहमासा

प्रियतम आकुल कुम्हरल दारा मन,
टिहुकि उठल ना ।

मूक शिशिर पुचकारथि कोना ?
दूर द्वीप सजना ।
जामिनी बनल कंत बिनु विजन,
तरूणी माघ मनाओल क्रन्दन,
सरस वसन्त क ललित रात्रि मे -
हहरै कंगना ।
प्रियतम...................

दादुर ठहकय तृप्ति सरोवर,
अश्रुधार सँ सींचित कोबर,
कीर मृदुल सुनि चैतो बीतल,
विह्वल नयना ।
प्रियतम ....

अहँ सँ सिनेहक धंधा कयलहुँ,
पौन आस बैशाख बुड़यलहुँ
हृदयक मीन नीर बिनु व्याकुल -
सुन्न पलना ।
प्रियतम ....

जेठक रौदी काटि रहल छल,
सूखल कानन झाँटि रहल छल,
उदधि अकाशे जल सँ तिरपित-
लवालव अंगना।
प्रियतम ....

साओन-भादव मौन मनाओल,
तुहिन गात तर आश्विन आयल,
कातिक - अगहन बिहुँसथि -
पूस मांगै छथि ललना ।
प्रियतम ....

कोप भवन मे कनियाँ

रूसलि किए सूतलि छी बनबू ने कनेक चाय अय ।
मिथिला हम चललहुँ , टाटानगरी सँ आइ अय ।

अहाँ जौ एना रहब तऽ हम कोना जीअब,
सदिखन कनिते - कनिते व्यथे जहर पीअब ।
एना अहाँ रूसब तऽ हम कऽ लेब दोसर सगाइ अय,
मिथिला ....

अहाँ केर रूप देखिते कामदेवो कानैत छथि,
''मृगनयनी'' कें ओ उर्वशी मानैत छथि ।
बिहुँसल मादक घुघना लागै लौंगियाँ मिरचाइ अय,
मिथिला ....

छगनलाल ज्वेलरी सँ कनक हार लायव,
आजु रैन पूनम कें, पार्क मे घुमायव ।
हहरल मनक तृष्णा, नहि बनू हरजाइ अय,
मिथिला ....

ऊठू प्रिये, अहाँ जल्दी नहाबू,
कोप भवन सँ उठि कऽ लऽग मे आबू ।
मंदहि मुस्की मारू, हऽम अनिलहुँ अछि मलाइ अय,
मिथिला ....

प्रेयसीक विलाप

लागै बरखा इन्होर,

मारै बयसक जोर,

मिलनक आशा मे बैसलि -

छी आबू ने चकोर ।

बाटे तऽ तकिते तकिये,

नयन सूखि गेलै,

प्रेयसीक विलाप पर नहि -

अहँक ध्यान एलै ।

ठनका गर्जय मांचल शोर,

तिरपित नृत्य मोरनी मोर ।

मिलनक आशा मे वैसलि,-

छी आबू ने चकोर ।

बेदर्दी जुनि बऽनू,

मोन टूटि गेलै ।

पावसक शीतलता -

आतप्त भेलै ।

लुप्त भगजोगिनी दर्शय भोर,

लटकल मेघ गगन घनघोर,

किएक हृदय तोड़ि रहलहुँ ।

हाँ ! हम्मर मन चित चोर ।

लंका

खुरखुर भैयाँ सूट सियौलनि,
बतही काकीक हाथ रूमाल ।

अध वयसि चोकटलही भौजी,
बाट पसारलि प्रेमाजाल
मैथिली कुहरथि पर्णकुटी मे,
सूर्पनखा बनली रानी ।

नेना पेट क्षीर विनु आकुल,
मोबाइल नचावथि पटरानी ।
अर्द्धांगिनी नेत्री सँ कुपित भऽ
शंखनाद कयलनि मामा ।

हस्त ऊक लऽ मामी खेहलथिन्ह,
फूजल मामा केर पैजामा ।
अपन पुतोहु कें झोंकि अन लमे,
बनि गेलीह गामक सरपंच ।
धर्माचार्य देव मंदिर केर,
मुदा हृदय भरल परपंच ।

कतेक घऽर मे सान्हि काटि,
शांति समिति केर आव प्रधान ।
रक्षक छथि चुटकी मे वैसल,
कोना बॉचत अवला केर मान ?
विद्यालय कें मुँह नहि देखल,
धएने कुरसी शिक्षा सचिव ।
कुटिल तंत्र केर ईह लीला मे
मारल गेलन्हि मूक गरीब ।

मुंडी इनार मे हुरहुर जनमल,
कमीशन लागत दस परसेन्ट ।
नौकरशाह मोटर मे घूमथि,
आँखि गोगल्स काँखि मे सेन्ट ।

सभ काज मे दिऔक भएट,
शौच करू वा लघुशंका ।
रामराज्य कें बिसरि जाऊ,
आर्यावर्त आव सद्यः लंका ।
राजनीति मे अज्ञ - विज्ञ केर,
नहि कोनो अछि वर्ग विभेद ।
अपने पीबथि ताड़ी दारू,
मंत्री विभाग मद्य निषेद्य

राग वसंतक गेल जमाना
सुनू ब्रितानी विकट संगीत ।
डंकल कुरथी पाक बनल
आ अप्पन वारिक पटुआ तीत ।

होरी

हाथ अबीर कॉरव पिचकारी,
भाल पर गदरल चाह उमंग ।
पूरन भैया होरी खेलथि,
नव नौतारि सारि केर संग ।
कखनहुँ डुबकी लैत अधर मे,
जुट्टी मे कखनहुँ हिलकोर ।
नील, वैंजनी लाल गुलाल सँ,
रंगलनि चम्पा पोरे - पोर ।

'टिल्लू' नयन पर अचरज पसरल,
देखि भ्राता केर बसन्ती वुन्न ।
एखनहुँ श्रृंगारक आह भरल मुदा -
आँखि अन्हार कान छन्हि सुन्न ।
हऽम पुछलअनि कोना कऽ कयलहुँ,
मधु सँ उबडुव मधुर प्रबंध ।
सकल तन अछि बेकार मुदा हम,
ध्राण शक्ति सँ सूँघल गंध ।
भौजी लऽ वाढ़नि आ खापड़ि,
झाड़ि देलनि भैयाँ केर अंग ।
कुरता फाटल नयन नोरायल
भूतल खसल होरी के रंग ।

मॉडर्न जमाना

नुआ धोती मिल बरहर जनमल,
आयल बरमूडा मिनी स्कर्ट ।
मुन्ना भैया चुनरी ओढ़ू,
भौजी पहिरलनि जोलही सर्ट ।

काकी मरौत काढ़ने बैसलि,
कक्का गऽर धरम केर वाना ।
कदली कनियाँक हाँथ मे वीयर,
आवि गेल मॉडर्न जमाना ।

भरि दिवसक गणना जौ करवै,
बहुआसिनक सात वेरि सतमनि ।
भरल साॅझ स्वामी आयल छथि,
अॅइठार वैसलि लऽ मुॅह मे दतमनि ।

अस्सी दशक मे माय सँ मम्मी
फेर मॉम आब भेली मम्मा ।
मायक भ्राता केर नाम की राखब?
मामा पिघलि बनला झामा ।

अपन नेना सँ वेस पियरगर,
संकर झवड़ा चायनीज कुकुर ।
भुटका - नाथ कें छाड़ि घऽर मे
टॉमी संग गेलि अंतःपुर ।

चरण स्पर्श निर्वाण लेलक आव,
छुट्टो कैंचा कें भऽगेल वाय ।
भौजी एकसरि मधुशाला मे
भैयाँ सँ गेलनि मोन अघाय ।

नेना पच्छिमक बोली उगलै ।
मॉ मैथिली कोना वजतीह दैयाँ ।
बात अंगरेजियाँ माथ घुसल नहि,
मुदा करै छथि याँ ! याँ ! याँ

तिलकोर मखान नीक नहि लागय,
नहि सुस्वादु मकैयक लावा ।
पॉपकॉर्न चाउमीन दलिया लेल,
मोॅछ पिजौने बैसलनि बाबा।

ऋतुराज

सोहर गावथि कोइली बहिना,
कीर मधुर ध्वनि बजबथि साज ।
जननी वीणा वादिनी हर्षित,
अवतार लेलनि सद्यः ऋृतुराज ।
गर्वित उपवन मधुपक गुंजन,
वर्णक पुष्पक दिव्य सोहनगर ।
सरिता लवलव शांत उदधि छथि,
मऽहु रसाल मे उमड़ल मज्जर।
माघक सातम धवल इजोरिया,
भेल नवल ऋृतु नृप छठिहार।
चिनुआर भरल पायस पूआ सँ,
कुलदेवी साजल उपहार ।
भगजोगिनी केर पंचम सुर सुनि,
आंगन महमह मुग्ध दलान ।
दशोदिशि मलमल गेना फूलल,
सरिसब बूट भरल खरिहान ।
रवि संग सुषमा अछिंजल उष्मा,
पात-पात पर पछवा वसात ।
विरहिनी बैसलि कंत आश मे
वयः ताप सँ उपटल गात ।
मातु उमा मन मुदित विभूषित,
सजल नुपूर चरण चमकल ।
शिवरात्रिक अवाहन भेलै,
नाथ कुशेश्वर छथि गमकल ।
संवत जड़ल आ होली आयल,
अबीर गुलाबी हरियर लाल ।
क्षितिज धरित्री एक बनल छथि,
ढ़ोलक डुग्गी झाॅझक ताल ।
छोट पैघ केर भेद मिटायल,

वृद्ध जुआन संग मे बाल ।
छोटकी कनियाँ ठोर रंगलि आ -
बऽरक भरल पान सँ गाल ।
भैया भांग सुधा मे सानल,
शिथिल पड़ल छथि माँझ ओसार ।
रंगलहुँ हऽम भौजीक चरण केँ,
विदा बसन्त एहि लोक सँ पार ।

नवतुरिया होरी

बाढ़िक पसाही मे डूबल सगरो मिथिला धाम ।
बागमती करेहक आंत मे, ओझरायल हम्मर गाम ।
भदैया संग रब्बी बूड़ल, जिरात मे फाटलि गंग ।
बीति गेल फागुन मुदा, ऊँच जोतॉस जलमग्न ।
नेना टोली हेरि रहल, सम्मत लेल खर पतवार ।
रामू बाबा सूतल खाट पर, ऊड़ल खोपरिक चार ।
पौत्रक नीन जहिना फूजल, झमाड़ल कुंभकरण ।
झट सनि ऊठू औ बाबा देखू नभ तरेगन ।
राम लोचन दौड़लनि गाड़ि पढ़ैत बड़ी पोखरिक मोहारि ।
बनि कपीश नेना भुटका देलक खोपड़ी जाड़ि ।
लालिमा देखि आदित्य कें कदवा कएल दलान ।
शंभू रंगलनि गोबर थाल सँ छोटका पाहुनक कान ।
तीन फुटिया लाला पैघ खोंचाह, हाकिम पर फेकल रंग ।
फूदन चिनुआरक घैल मे, मिलाओल चिन्नी भंग ।
भरि कठौत पायस भरल, घिवही पूआ केर संग ।
भौजी तन बोरल गुलाल सँ, उमड़ल मातृ उमंग ।
चैतावर टिटही तान मे, गावथि टलहा दऽल ।
छोट छीन गुंजन - सुमन्त, घूमथि भूत बनऽल ।
सा रा रा रा गूंजि रहल लुटकुन जीक बथान ।
सियाराम जय गान सँ गमगम मैथिल दलान ।
डॉक्टर भैयाक सार पर ढ़ारल कारी मोबिल ।
देखि नेना गण केर होरी गहुमनो घुसि गेल विल ।

चैतावर

आयल चैत मधुर रंग पॉचम,
उपवन बुलबुल गावय ना .... ।
सन - सन पुरबा मलय वसात,
झन - झन देह झनकाबय ना............. ।
कुहकै कुक कोइली बबुर वन,
चहकै अलि पाटलि मधुवन,
फड़कै मोर मोरनि लोचन,
फनकै मृगी पद फन - फन,
भन - भन मन भनकावय ना ।
सन - सन....................
भाविनी खिलायलि गहवर,
वहिना मुदित हिय फरफर,
सखी नेह मातलि कोहवर
भौजी रेह गावथि सोहर,
क्षण - क्षण तन छनकावय ना ।
सन - सन....................
प्रियतम व्यथित ई आखर,
नोरक सियाही झरझर,
कोमल शय्या भेल खरखर,
सुखि देह वक सन पातर
कण - कण पट सिहरावय ना ।
सन - सन....................
उपटल फागुन केर रस वुन,
हहरल नुपूर स्वर झुन - झुन,
विकल नैन भेल अधर सुन्न
अछि कोन कांता मे अवगुन?
घन - घन घट सनकावय ना ।
सन - सन....................

व्रत एकान्त

लुटकुन जी केर चकचक भाल,
कपोल सिनुरियाँ बनल रसाल ।
टीशन चलला लऽ घटही कार,
आवि रहल थिन्ह सासु आ सार ।
छहछह तन मन भरल उमंग,
गृह घुरलनि विधि माताक संग ।
झटपट शांभवि चाह बनावू,
पहिने रूहे आफजा लावू ।
मम्मी छथि वड़ जोड़ पियाँसलि
भूक्खे समस्तीपूर सँ मैसूर आयलि ।
जलखै सेवै दलिपूड़ी क बोर,
मझिनी भुजल परोर आ इचना झोर ।
जुनि करू अकरहरि श्रवण जमाय,
अहँक सासु तऽ हमरो माय ।
माय हमर आडम्वरि धर्मी,
सनातन पालिका संग षट्कर्मी ।
मतिसुन्न लक्ष्मीनाथ बजार गेलनि,
फुलल परोर माँछ इचना लेलनि ।
देखिते भऽरल माँछक झोरा,
फुजलनि सासु वन्न मुँह वोरा ।
पाहुन देलथिन धऽर घिनाय,
कोना करव हम नहाँय खाय ?
काल्हि हमर छी व्रत एकान्त
मछैन गृह केर सगरो प्रान्त ।
फेकू माँछ सटल तरकारी,
गं्गाजल सँ धोयब आंगन वारी ।
गैस चढ़ल अन्न नहि खायब,
बौआ सँ अंगूर सेव मंगायव ।
काल्हुक लेल चाही आमक चेरा,
माटिक चूल्हि आ वॉस चडेÛरा ।

सिंगापूरी नहि चिनियाॅ केरा,
शुद्ध सुधा गुड़ सानल पेरा ।
शांभवि ई मैसूर नहि गाम,
कतऽ हम ताकू जाड़नि आम?
विकट भेल रवि व्रत एकान्त,
एहि चक्कर हमर जीवन अशान्त ।
लुटकुन माथ मे शोणित अटकल,
भाय वहिन मुॅह मुस्की फटकल ।
हम की करव सभ दोष अहाँ कें,
पावनि मास किएक बजौलहुँ माँ के ?
ताकय चललनि कर्नाटक केर गाम,
हाँथ चूल्हि माँथ गठरी आम ।
सोझे आवि खाट पर खसलनि ।
शांभवि जोर ठहक्का हँसलनि ।
सुनू प्रिये तारू सूखल अछि,
जल विनु हम्मर हिय विकल अछि ।
एहेन व्यथा नहि हँसि उड़ाबू,
त्रास कंठगत नीर पियाबू ।

अनाचार

विहुंसल विजुकल दुष्यन्तक मन तनय गड़ल अछि थाल मे ।
न्याय - धर्म भू हिन्द घेरायल अनाचार केर जाल मे ।
परदारा आ परक द्रव्य दिशि,
अधम कुलोचन हुलकि रहल ।
राजकोष केर बात की कहू ?
श्वेत वस्त्र बीचि फुदकि रहल ।
जनतंत्रक आंचर वसुधा पर मुस्की कौरव भाल मे ।
न्याय ....
उदयन दर्शन आव अलौकिक,
भेल विदेहक कथा विलुप्त,
सभजन लागल भौतिकता मे
बुद्ध अयाची पुंज शुशुप्त,
खर खवास सँ मालिक धरि नाचय कैंचा केर ताल मे ।
न्याय ....
काटर लऽ कऽ गृहस्थ धर्म कें,
पालन कऽ रहलनि मनुसंतान ।
जानकी माता पातरि सजावथि,
मधुशाला पैसलनि हनुमान ।
गर्भक कन्या भ्रूण हत्या सँ समायलि कालक गाल मे ।
न्याय ....
जाति, पंथ, भाषा विभेद ई,
प्रजातंत्र कें साड़ि रहल ।
कुटिल राजर्षिक चक्रव्यूह,
अपने अपना कें जाड़ि रहल
देवभूमि कें दियौ मुक्ति फॅसि गेल दलालक चाल मे ।
न्याय ....

अभिनव मिथिला धाम

''माँ मिथिले अभिनव मिथिला धाम ।
अहँक कोर कें छोड़ि आव हम,
नहि जएव दोसर ठाम ।
माँ मिथिले ....
वौरयलहुँ सगरो आर्य भुवन मे,
कतहु न भेटल चैन ।
अकवक विकल दिवस दुःख भोगलहुँ,
तमस कटै छल रैन ।
माँ मिथिले ....
नवटोल नववोल देखलहुँ नवल चालि,
भाउज भावहुक नहि भान ।
तात पूत एक्के संग वैसल,
करथि सुरारस पान ।
माँ मिथिले ....
मैथिल दीन जनेर फॅकै छथि,
मुदा देव पितरक मान ।
छोट पैघ वीचि लक्षिमन रेखा,
नहि ककरो अपमान ।
माँ मिथिले ....
उदयन सँ दर्शन सीखि वॉटव,
अयाँची सँ, आत्म सम्मान ।
भारती मंडन सँ ब्रहम ज्ञान लेव,
आरसी याँत्री सँ स्वाभिमान ।
माँ मिथिले ....
उर्मि धिआक त्याग देखिक,
कण-कण भाव विभोर,
वैदेहीक सती धर्म सँ उमड़ल,
कमला मे हिलकोर ।

माँ मिथिले ....
गोविन्द मधुपक सुनव पराती,
खोलि क दुनू कान ।
शिव शक्ति कें श्रद्धा सँ पूजव,
सुनवैत विद्यापति गान ।
माँ मिथिले ....
खोरा चाउर संग भाटा अदौरी,
वथुआ तिलकोर मखान ।
आचमनि श्वेत वलानक जल सँ,
गलौंठी पतैलीक पान ।
माँ मिथिले ....
आन धाम सँ रास सोहनगर,
कुलदेवी क गहवर ।
पच्छिमक त्वरित गीत सँ रूचिगर
अपन वैन सोहर ।
माँ मिथिले ....

हे तात

विलखि रहल छी अन्हर जाल मे,
छोड़ि कत चलि गेलहुँ तात ।
कॉपि रहल छथि सूर्यमुखी आ,
कुहरथि वृद्ध कनैलक पात ।
टोलक सभटा नेना भुटका,
आश लगौने घूमथि वथान ।
के देत उदयन धामक पेड़ा,
के देत मिठगर मगही पान ।
पंडित बाबा खाट पकड़लनि,
ककरा मुख सँ सुनता गान ।
श्यामजी अश्रु इनार मे पैसलनि,
आव के कहतनि पैघ अकान ।
आर्या मॉंक दुआरि सुन्न अछि,
सत्संगी सभ ओलती मे ठाढ़ ।
भक्ति सागरक धार विलोकित,
लुप्त गगन मे अहँक कहाँर ।
अनसोहाँत ई दैवक लीला,
कोना बनौलनि मर्त्य भुवन ?
विज्ञानक ऑगन सँ बाहर,
जन्म मरण जीवन दर्शन ।
करतीह कोना श्रृंगार मेनका,
करतनि के रूपक वर्णन ।
देवराज छथि कोप भवन मे
जल विनु करव कोना तर्पण?
मुख मलीन कहियो नहि देखलहुँ,
सुख दुख सँ अहाँ विलग विदेह ।
अंतिम भीख मँगै छी बाबू,
दर्शन दिऔ एक वेरि सदेह ।

आत्म उद्बोधन

अहाँ अपने पड़ल छी घोंटि धथुर कैलाश औ,
टूटल हम्मर आश औ ना ।

धरा पर अयलहुँ प्रदोषक दिन,
मातु - पितु अहँक भक्ति मे लीन,
बूझल सभ जन वम वम लेलनि हमर घर वासऔ ।
टूटल ....

नेन कालहिं सँ छी हर भक्त,
सुखायल करम - धरम मे रक्त,
शारदालीन संग मे शंकर पर विश्वास औ ।
टूटल ....

देखिते वितल सुधामयी वर्ख,
जीवन सँ दूर भागि गेल हर्ख,
जननी उठलि भूमि सँ छोड़ि मोहक पाश औ ।
टूटल ....

चहुँ दिशि कालक भेल प्रहाँर,
करम गति फॅसल वीचि मॅझधार,
उदधि मरूस्थलि भेली हिय मे पसरल त्रास औ ।
टूटल ....

'आशु' अछि मात्र अहीं सँ मोह,
होईछ अपन भाग पर छोह,
हरू दुःख वा करू हम्मर निरस जीवनक नाश औ ।
टूटल ....

कोना कऽ अंतिम नमन करव

(कन्या भ्रूण हत्या पर एक छोट रचना)

कोना कऽ अंतिम नमन करव,
आँचरकेँ अहाँ कलंकित कएलहुँ
पुत्र जन्म सेहंतित सपना मे
करूणाधारिणी निर्दयी भेलहुँ ।
नहि देखलहुँ आदित्य नहि शशिक शिखा,
नहि नभ देखलहुँ नहि देखलहुँ वसुधा
नहि भेटल छोह नहि मृदुल क्षेम,
नहि मोती माणिक्य रजत हेम,
पॉच मास अहँक गर्भ मे रहलहुँ
जनपरिजनक तिरस्कार सहलहुँ
अपैत बूझि कएलहुँ अहाँ गर्भपात
भेल अपूर्ण नेना पर वज्रपात
अछि कोन ओ शक्ति मनुसुत मे
जे बेटी मे नहि दर्शित भेल
मणिकर्णिका क शंखनाद सुनिते
वृद्ध कुंवरक यौवन झट धुरि गेल
दुःख एक्के वातक तातप्रिया
सृष्टि देलनि संतति कें गरल पिआ
पावन आर्यभूमिक सुनयना
वैदेही कें देलीह माटि मिला
भववंधनक ई केहेन दर्शन
नीर क्षीर विनु वीतल जीवन
तजि गेल प्राण तँ अनल अर्पण
अमिय मधु सँ पुत्र कएलनि तर्पण

एक वेरि हमरो जौ कहितहुँ अहाँ
जीवन मे सुधा वोरि देतहुँ माँ
देतहुँ सतरंगी परिधान
पुत्र सँ वढ़ि कऽ करितहुँ सम्मान
दिअ आशीष हमर जननी
फेरि वेटी वनि नहि आवी अवनी
नहि सूखय पुनि नव किसलय दल
नहि जल सँ पहिने भेटय अनल

पावस

लगिते आतप अनल ज्वाल सँ,
पसरल सगरो हाँहाँकार
तरूण - वरूणक अग्निवेश सँ
जीव - अजीव मे अशांतिक ज्वार
मोन विरंजित हृदय सशंकित
वनल सरोवर कलुष मसान
सूखल किसलयक कोमल कांति
धधकि रहल नव लता वितान
नष्ट करब एहि प्रलय भयंकर
प्रकट भेलन्हि अपने देवेश
घन घन घटाक संग आगमन
शीतल पावस बूनक वेश
नव रंग नव धुन नव मुस्कान
घुरल सृष्टि मे नवल जान

पुष्प खियालि कांचन उपवन
फूरल भ्रमर कें मधुर गान
मंतलि सरोवर कलकल सरिता
नूतन नीरक खहखह धारा
आयल कृषक मे दिव्य चेतना
भागल वेदनाक पुरा अँधियारा
पंकज प्रस्फुटित भेल सरोवर
वकः काक चित शांत सोहनगर
भरल घटा मे मोर मजूरक
नाच मधुर वड़ लागय रूचिगर
गोधूलिक पवन वेग मे
चहकि उठल भगजोगिनी
वयः ताप मे उमड़ि गेलि
मिलनक वियोग मे तरूणी
उन्मत्त घटा संग मधुर प्रेम मे
नर-नारी भ' गेल विभोर
दुई मासक ई रूचिगर पावस
उमड़ाओल नव सृष्टिक जोर

गीत

पिया निर्मोही खनकि गेल कंगना,
विपुल मृगी नयना,
किएक अहाँ बनलौ औ -
प्रवासी सजना ।

आगि भेल शीतल उधिया रहल पानि,
सुवासित जीवन मे उफनि गेल ग्लानि,
सुन्न प्रेयसीक सिनेह हृदय अंगना,
विपुल मृगी नयना .... ।

उमड़ि रहल विरह प्रखर आतप समान,
मुरूझायल शुष्क अधर मरूघट मे प्राण,
धॅसल बान्ह मर्यादाक सजना,
विपुल मृगी नयना .... ।

क्षणहि मे जीवन अभिशापित वनल,
सूखि गेल नेह पुष्प नोर सँ भरल,
आव कहि ने सकव हम सजना
विपुल मृगी नयना .... ।

कक्का औ (बाल कविता)

सिबू मरसएब बड़ मरखाह छथि

छक्का छोड़ौलनि कक्का औ

दाँत कीचि दुनू भौं सिकुड़ाबथि

हाँथमे नरकटिक सटक्का औ...

भूगोलक पहरि संस्कृत वचै छथि

क्षणे-क्षण नोंइस लऽ हाँफी छिकै छथि

पंचतंत्र पर करथि टिटम्भा

विष्णुशर्मा सँ नमछर खम्भा

बरहर गाछ तर गदहा बना कऽ

पाँछासँ मारथि धक्का औ...

जखन कोनो छन्दक अर्थ पुछै छी

कहै छथि कुकुर पर लेख लिखें रौ

कहू तँ कोना हम एक्के पहरिमे

रंग-बिरंगक बयना सीखू

हाँथ मचोरि पीआठ पर देलनि

बज्जर सन दू मुक्का औ...

मुरुखे रहब आ महिस चराएब

कहियो नहि ओहि इसकुल जाएब

एहन राकस सँ जान छोड़ाउ

भरि जिनगी अहँक गुण गाएब

बजै छी किछु जौं नजरि झुका कऽ

खिसियाबथि कहि भूतक्का औ...

हिंसक नानी

खापड़ि बेलना केर कहानी,
आब नहि दोहराबू अय नानी ।

नाना बऽनल छथि सियाँर,
भक् छथि जेना हुलुक बिलार,
दंतक गणना घटि कऽ बीस
हुरथि गूड़ - चूड़ा कें पीस
गावथि दारा दरद जमानी ।
आब...............

वरन् केर वर्ख भेल चालीस,
अर्पित अहँक चरण मे शीश,

अहाँ लेल लबलब दूध गिलास,
नोर पीबि अपन बुझावथि त्रास,
क्षमा करू ! छोड़ू आब गुमानी ।
आब...............

अवकाश क बीति गेल दस साल,
पेंशन सँ आनथि सेब रसाल,
भरि दिन पान अहाँ केर गाल
ऊपर सँ मचा रहल छी ताल,
चमेली सँ भीजल अछि चानी
आब...............

कतेक दिन सुनता पितृ उगाही,
संतति पूरि गेलनि दू गाही,
मामा मामी क बिहुँसल ठोर,
मॉ छथि, चुप्प ! साधने नोर,
कोना बनि जेता आत्म बलिदानी
आब...............

चश्माक बोखार

सोलहम मे कएल अंतःस्थ प्रवेश,

हुलसल मन गेलहुँ नवल देश ।

हिय बसथि कला धयलहुँ विज्ञान,

राखल जननी इच्छाक मान ।

वैद्य अंगरेजियाँ वनि बचाबू दीनक परान,

अर्थहीन मिथिला मे बढ़त शान ।

धऽ ध्यान सुनल सृष्टिक इच्छा,

गाँठि बान्हि लेलहुँ लऽ गुरूदीक्षा ।

कॉलेज मे बीतल पहिल सत्र,

आओल तातक आदेश पत्र ।

पढ़िते आबू अहाँ अपन गाम,

हैत ज्येष्ठक विवाह विद्यापति धाम

तन झमकि गेल, मन गेल गुदकि

भौजी कें देखबनि हऽम हुलकि ।

आगत रवि पहुँचल जनम ग्राम,

शत अभ्यागत छथि ताम-झाम ।

चहुँ - दिशि भऽ रहल चहल पहल,

चिन्ह - अनचिन्ह सखा सँ भरल महल ।

एक नव नौतारि बहुआयाँमी,

पूछल सँ छथि छोटकी मामी ।

प्रथमहि हुनका सँ भेंट भेल,

भेल दुनू गोटे मे क्षणहिं मेल ।

साॅझे औतीह दीदी अनिता,

आकुल माँ केर एक मात्र वनिता ।

देखिते देखैत आबि गेल साॅझ,

माँ तकिते बाट ओसार माँझ ।

दीदी आंगन अयलि हँसिते हँसैत

माँ गऽर लगौलनि ठोहि कनैत ।

हिनक नयन हेरायल रिमलेस मे,

देखि मामी पड़लनि पेशोपेस मे ।

चश्मा मे सुन्नर दाईक विभा,

बढ़ि रहल हिनक नयनक शोभा ।

मामी ! ई सऽख नहि आँखिक इलाज,

माँथ दर्द सँ छल वाधित सभ काज ।

सुनि मामी मोन भऽ गेल अलसित,

हुनक वाम आँखि मे पीड़ा अतुलित ।

नोचिते नोचैत भेल नयन लाल,

दर्द पसरि रहल सम्पूर्ण भाल ।

आंगन दलान पीड़ा किल्लोल,

आँखि धोलनि लऽ जल डोले डोल ।

फूलि गेल नयन केर अधर पऽल,

हऽम सेकलहुँ लऽ गुलाब जऽल ।

वैद्यो आयल नहि कोनो असरि,

कछमछ कऽ रहली - रहली कुहरि ।

माते कयलनि बाबूजीक ध्यानाकर्षण,

आँगन मे आबि ओ दऽ रहला भाषण ।

सभ दोष सारक नहि दैछ ध्यान,

वयस तीस मुदा एखनहुँ अज्ञान ।

रक्त जमल विलोचन झिल्ली मे,

सैनिक कंत पड़ल छथि दिल्ली मे ।

सरहोजि सँ पुछलनि पीड़ाक काल,

पहिल बेरि भेल छल परूँका साल ।

माँ सऽ कहलनि लाउ नव अंगा,

हिनका लऽ जायब दड़िभंगा ।

तिरस्कार करब नहि हएत उचित,

कनियाँ दरद सँ अति विहुंसित ।

काल्हि अछि विवाह अहाँ जुनि जाऊ,

करैत छी उपाय नहि घबराऊ

भोरे 'टिल्लू' जेता हिनक संग,

नहि विवाह मे कऽ सकलनि हुड़दंग ।

भातृक सासुर जेता चतुर्थी मे,

मातृ आदेश लागल हम अर्थी मे ।

नहि बात काटल शांत छलहुँ सुनैत,

राति बितल सुजनी मे कनिते कनैत ।

कोन बदला लेलक बापक सार,

अपन संकट बान्हल हमरा कपार ।

मामी कें हम नहि चीन्हि सकल,

भीतर सँ इन्होर ऊपर शीतल ।

नहि जा सकलहुँ हम वरियाँती,

गाबै छी हुनक दुःखक पॉती,

भोरे उठि दड़िभंगा जा रहलहुँ,

नैनक शोणित सँ नहाँ रहलहुँ ।

पहुँचल डॉक्टर मिसिर केर क्लिनिक,

चक्षुक चिकित्सक सभ सँ नीक

दुआरे पर कम्पाउन्डर नाम पुछल,

मामी नुपूर कहलनि ओ कुकुर लिखल ।

देखऽ मे भऽल पर वज्र बहीर,

उपरि मन हँसल, भीतर अधीर ।

वैद्य मिसिर कहल नहि दृष्टि दोष

दुहू आँखिये देखै छथि कोसे-कोस ।

नेत्रक आगाँ नहि अछि अन्हार

हिनका लागल चश्माक बोखार ।

हम लिखि दैत छी शून्य ग्लास,

बुझा दिऔन हिनक रिमलेशक प्यास ।

ताहू सँ जौं नहि हेती नीक,

आँखि सेकू बनि स्नेही बनिक,

अधर पर मुस्की आगाँ अन्हार,

कानल मन सोचि विवाहक मल्हार ।

डॉक्टर बनऽ केर तृष्णा मन सँ भागल,

एहेन मरीज भेटत तऽ हएब पागल ।

धुरि गाम माता केर करब नमन,

तोड़ू जननी हमरा सँ लेल वचन ।

चशमिश नैन मामी छथि अति गदरल,

हमर योजना हिनक भभटपन मे उड़ल ।

आकुल जननी
(बाल कविता)

सूति रहू हमर लाल, अर्द्ध रैनि बीतल ।
अहँक अविरल नयन सँ आँचर तीतल ।

घोंटि अछिंजल काटि रहलहुँ अछि जीवन,
तात दर्शनक आश छिन्न किएल अरपन,
क्षीर बिनु दुहू वक्ष शुष्क पड़ल ।
सूति रहू ....

कोन सियाँही सँ लिखल विधना हमर कपार ?
अपने प्रवास गेलनि छोड़ि हमरा व्यथा धार,
चानन सन नेनाक हिय, भूख सँ कानल ।
सूति रहू ....

हुनके की दोष दिअऽ स्नेहक ओ दिव्यमूर्ति,
कायाँदीन विद्याविहीन करथि पंचजनक पूर्ति,
अहँक अश्रु मातृ नयन शोणित भरल ।
सूति रहू ....

कहबनि गौमाता आनू औता फागुन मे
कामधेनुक सुधा भरब अहँक कण-कण मे
अहाँ निन्न हऽम कल्पना मे उड़ल ।
सूति रहू ....

अंतिम छंद
(बाल कविता)

सात बरख केर जखन वयस छल,
विहुंसल मन उजड़ल मकरन्द ।
एखनहुँ क्षण - क्षण हिय सँ उफनय,
माय जे वाजलि अंतिम छंद ।
सुनू पूत हम छाड़ि अवनि कें,
जा रहलहुँ विधना केर घऽर ।
अपन तात कें कोंचा पकड़ू,
मानि जननि शीतल आँचर ।
हमर चरण धऽ लियऽ अहाँ प्रण,
तनय धरम केर राखब मान ।
कर्म डगरि पर हमर छाँह संग,
बढ़ब करैत पितृक सम्मान ।
हंसवाहिनी चरण मे अर्पित,
अपन शीश दऽ सोखब ज्ञान ।
नीच बाट पर डेग नहि राखब,
जीवन मे करब नहि सुरापान ।
केहन दृष्ट अदृश्य व्याधि ई,
सभ किछु बूड़ल अहाँ भेलहुँ दीन ।
हिय नहि हारू एहि अखिल भुवन मे,
छथि कतेक लाल साधन विहीन ।
अम्बुज अहाँ कें हमर शपथ थिक -
विलोचन सँ जुनि बहबू नोर ।
शिखर लक्ष्य कें निश्चित साधव,
दैत मातृ स्मृतिक वोर ।
हुनक दिव्य आशीष प्रताप सँ,
भेल धन, मन, यश पूरित जीवन ।
मुदा 'माय' गुंजन जौ सुनि हम,

रोम-रोम सँ उपटय क्रन्दन ।

हुरहुर

(बाल कविता)

दलानक पाँजरि गमकि रहल छल,
गदरल गाछ फुलल फुलवारी।
कात सटल कट्ठा भरि लागल,
खसखस साग हरियर तरकारी ।
बाबा कमावथि सीता गुनि - गुनि,
हमर हाथ मे जऽलक गगरी ।
हुनक नैन सँ ओझल भऽ कऽ,
खूब चिबाबी गाजर ककरी ।
लदल गाछ छल नेबो बरहर,
अनार शरीफा मधुर लताम ।
बिनु आज्ञा केयो पात जौ छूबय,
बाबा छीलथि ओक्कर चाम ।
दीर्घ पिपासित किछु गाछ कॅपै छल,
ढ़ारि देलहुँ भरि गगरी नीर ।
झन्न पीठ पर लागल चटकन,
उमड़ल व्यथा गेल देह सिहरि ।
खसि पड़लहुँ कात परती मे,
तमकैत बाबा लगलनि दुत्कारय ।
अछि उदण्ड दीर्घटेंटी नेना,
हम्मर कोनो बात ने मानय ।
पुष्पहीन अफलित गाछ पर,
देलक सभटा जऽल उड़ेल ।
नीक अधलाह गप्प बूझय नहि,
तेसर कक्षा मे चलि गेल ।
भनसार आबि माय सँ पूछल,
लोचन डबडब नासिका सुरसुर ।

आड़ि मुरझायल थिक कोन झाड़ी,
बाउ ओहि अनाथक नाम हुरहुर ।
माल जाल सँ फुलवारी बचवऽ लेल,
आड़ि पर मालिक ओकरा रोपय ।
सामन्ती जिरातक उपेक्षित सेवक,
खाद - पानि लेल ककरो नहि टोकय ।
लोलुप जहाँनक अपवर्जी थिक
सओन जनमल वैशाखे उपटल ।
तीत पात मे पुष्प खिलय नहि,
उपहासे मे जीवन विपटल ।
रैन इजारियाँ गगरी भरि - भरि,
जल सँ देलहुँ हुरहुर कें बोरि ।
भोरे - भोरे बाबा कें देखल,
सजावैत कियारी पासनि सँ कोरि ।
कर्कष हिय मे प्रीति देखि कऽ,
झट दौड़ि हुनका गऽर लगाओल ।
दलित उपेक्षित जीवन वॉचल,
श्रद्धा सँ नोर टपकाओल ।

अंजलि

(बाल कविता)

कक्का : सूति रहू अय बुच्ची ओल,
पाकल परोर सन लागय लोल ।
उल्लू मुख भदैयाँ खिखिरक वोल,
नाम 'अंजलि' कतेक अनमोल ।

अंजलि : माँ टिल्लू कक्का वड़का शैतान,
थापर मारि ठोकै छथि कान ।
अहाँ सँ नुका कऽ चिववथि पान,
फोड़वनि माथ वा तोड़वनि टॉग ।

कक्का : भौजी ! छोटकी फूसि वजै छथि,
रीतू संग भरि दिन विन-विन करै छथि ।
दावि रहल छी हिनक देह हम,
उत्छृंखल नेना करै छथि तम-तम ।

अंजलि : कक्का जुनि घोरू मिथ्याक भंग,
आव नहि सूतव हम अहाँक संग ।
माँ लग हमरा सँ सिनेह देखवैत छी,
एकात पावि हमर घेंटी दवैत छी ।

कक्का : पठा देव काल्हि अहाँ कें हाँस्टल,
नेनपन ओहि ठॉ भऽ जएत शीतल ।
ओतय भेटत नहि खीरक थारी,
नहि रसमलाइ नहि पनीरक तरकारी ।

अंजलि : काकू बनव हम बुधियाँरि नेना,
सदिखन वाजव सुमधुर वयना ।
ककरो संग नहि मुँह लगाएव,
अहीं लग रहव हाँस्टल नहि जाएव ।

अहँक आँचर

(बाल कविता)

आव विसरव कोना सुनू जननी अहाँ,

कतेक निर्मल सेहंतित अहँक आँचर ।

हिय सिहकै जखन वहै लोचन तखन

नोर पोछलहुँ लपेटि हम अहँक आँचर ।
कोना अयलहुँ खलक ? मोन नहि अछि कथा,

पवित्र पट सँ सटल देह भागल व्यथा ।
सिनेह निश्छल अनमोल प्रथम सुनलहुँ मातृबोल,

मोह ममताक आन के करत परतर?

दंत दुग्धक उगल, नीर पेट सँ बहल,

देह लुत्ती भरल कंठ सरिता सुखल ।
जी करै छल विसविस तालु अतुल टिसटिस,

मुँह मे लऽ चिवयलहुँ अहँक आँचर ।

नेना वयसक अवसान ताकऽ चललहुँ हम ज्ञान,

कएलहुँ गणना अशुद्ध गुरू फोड़ि देलनि कान ।
सिलेट वाट पर पटकि माँक कोर मे सटकि,

तीतल कमलाक धार सँ अहँक आँचर ।

देखि पाँचमक फल मातृदीक्षा सफल,

भाल तिरपित मुदा ! उर तृष्णा भरल ।
गेलहुँ कतऽ हे अम्बे कतऽ गेल आँचर,

ताकि रहलहुँ हम आंगन सँ पिपरक तर ।

स्निग्ध-स्वाती

झिहिर-झिहिर ना हे पिया,

    झिहिर-झिहिर ना!

झहरय स्निग्ध स्वातीमे बदरा,

    झिहिर-झिहिर ना...!

परम सुहावन मास विरह हिय,

    टपकए नेहक बुन्न

ललित पवनमे ठिठुरि रहल छी,

    जीवन भऽ गेल सुन्न

टपकए विरहक अश्रुलाप ई,

    झिहिर-झिहिर ना...

तृप्ति-तपित सितुआक कल्पना,

    उपटल अर्णव तट मोती

अहाँ बहएलहुँ निरस जीवनमे,

    किए अगम दु:ख सोती?

मिलनक आश कानए पैजनियाँ,

झुनुर-झुनुर ना....

कांति श्रवित माणिक्य बनल,

मदमत्त भेल गजराज

मुग्ध जहानक रम्य प्रहरमे,

फफकि गेलहुँ हे ताज!

तोड़ू वेदनाक डोरि ई,

झमड़ि-झमड़ि ना.....।।

घटा बसन्ती

कूकू केर मादक स्वर सुनिते,
सिनेहातुर मन चहकि उठल
उबडुब आनन हरियर कानन,
"घटा वसन्ती" धार बहल।
तितली रूनझुन नीरज रससँ
कएलक झंकृत सकल जहान
अपन मनोरथ सिद्धि करऽ लेल
प्रेयसी कएल त्रृतुराजक गान।
उमड़ि रहल नव तरूणी यौबन
रसस्नात भेलि चंचला-गात
पुष्प सेजपर मिलन सम्मोहक
चभटि गेल अछि दुनू पात।
जर्जर वृद्धा आ सुखल वृद्धमे
धुरि आएल पुनि कामुक जान

भागि गेलनि धर्मराज देखि कऽ

ऋृतुराजक ई अनुपम शान।

हॅसी-खुशीसँ चल-अचल जीवन,

ताकि रहल होरी केर वाट

जड़-चेतनक सुरभित कांति देखि कऽ

कएलक गान हृदयसँ भाट।

रंग-विरंगक अवीर गुलाल संग

नाचि रहल उन्मादित होरी

सृष्टि मनोहर चक-चक तरूवर

मॉतल चह-चह चहुँदिशि जोड़ी।

चैतावरक ओंघाएल कलरब

अग्निदेव केर जुआरि बढ़ल

घटल जहानमे कलकल जीवन

मादकता स्वर्गोकेँ जीतल।।

साहित्यक विदूषक

किए हमरा कहै छी विदूषक।
की हम केलहुँ अहाँसँ खटपट।।
शैशव अप्पन गाममे बितएलहुँ
सभ ठाम देसिल गीत सुनएलहुँ
मूड़न हो वा महुअक।
मात्र विदेहसँ रखलहुँ आशा
सभ दिन पढ़लहुँ मैथिली भाषा
व्यारव्याता बनि भेलहुँ चकमक।
श्रृंगार पहरमे कविता लिखै छी,
छी गृहस्थ मुदा बैराग सिखै छी
हमर जीवन दरससँ ओ भेलि भक्।
कहिया धरि बॉटव जागरणक परचा
कतहुँ नहि देखलहुँ अप्पन चरचा
दक्षिण नयन भेल फकफक।

दिनचर्या लिखि कवि बनि गेला

आन्हर गुरू संग बताह चेला

उल्लू लग कोकिल ठकमक।

कतेक दिन भरत विलाप सुनाएव

फोका डबडब परिचय प्रसूनक।

आउ-आउ दीर्घ सूत्री भेद मेटा दिअ

हमहूँ मैथिल गऽर लगा लिअ

बनाउ मिथिलाकेँ सम्यक।

मुदा जीबै छी

जीवनक डोरि फुजि उड़ल व्योममे
कातर प्राण मुदा जीबै छी
सड़ल वसन पजड़ल अछि आंगुर
गलल ताग गुदरी सीबै छी....
ककरो बाड़ी बेली फुलाएल
ककरो पोखरि भैंटक लावा
हमरा घरक परथनो गिल्ल भेल
आँचक बिना सुन्न अछि तावा
कागत-मुद्राकेँ बीड़ी बना कऽ
कोंढ़सँ लेसि-लेसि पीबै छी.....
लाल रंग शोणित सन टपकय
पीत कुटिल पिलहा बनि धधकय
कुपित होलिका छाँह देखाबथि
बड़ीपर काक-भुसुण्डी हबकय
अग्निदेवक हुथ्थ डाङसँ
सुधाकेँ खोड़ि-खोड़ि जड़बै छी....
कटाह वसंत कहियो नै आबथि
राखथु अपने संग विधाता
कुसुमित रहै सबहक आङन घर
हँसि-हँसि कौड़ी खेलथि पुनीता
अपन संत्रासकेँ हियामे नुका कऽ
सबहक सुखक कामना करै छी.....।।

रमा

साँझ पहर दिप-वाती दिन एलौं
रमा नाओं रखने छलि बाबी
मातृ कोरक हम पहिलुक नेना
कोन-कोन जीवन गीत गाबी
खढ़क मचान निलय बनि चमकल
कनक-रजतसँ छनछन माता
पिताक बटुआमे बैसलनि लक्ष्मी
कण-कण खह-खह कएल विधाता
लव-कुश बनि जननीक कोखिसँ
दू-दू सारस आङनमे खिलाएल
तरूण लताकेँ स्निग्ध देखि
सर समाज घूरथि औनाएल
धेलकनि पाण्डु जर बाबूकेँ
नोकरी छोड़ि खाटपर खसलनि
खेत पथार व्याधि संग बूड़ल

तैयो तेसर लोकमे पैसलनि

जै ओलती छल तृप्त पपिहरा

सुग्गा चुनमुनीक चहचह शोर

क्षणहिमे देवराज टपकेलनि

शरद-निशामे आगि इन्होर

हाथसँ करची कलम छूटि गेल

छोड़ि पड़ेलनि भामिनी- भद्रा

चरण नुपूर धरा खसि टूटल

आङन बाड़ी भरल दरिद्रा

काँच बएसमे सेंथुमे सिनूर

गदगद भेलीह मातु सुनयना

कहुना लाज गेल दोसर घर

सुखद नोर खसबै छथि मयना

कंतक आङन सेहो कलुष भेल

जखने निकसल वज्र चरण रज

रैन पचीसी संग सिनेहक

लहठी फोड़ि निपत्ता पंकज

तुसारिक निस्तार कोना कऽ करितौं

उज्जर नूआ खाली हाथ

सेंथुसँ सेनुर अपने पोछलौं

आन्हर सासु संग पीटै छथि माथ

आजुक डाइन- कहियो छलौं लक्ष्मी

छाँहसँ भागथि अहिवातिन सभ

नोरक घृतसँ चिनुआर निपै छी

ककरो संग नै बाँटब कलरब

काक-दृष्टि धेने छथि बाहर

चानन ठोप केने किछु लोक

आर्य भुवनक रौ बनमानुष सभ

गर्दनि दाबि पठबए परलोक

नारीटा लेल निअम केहेन ई?

वरन् एक तँ कहाएब सती

अपन कांताकैँ छोड़ि घरमे

कहिया धरि तकबैँ अबला रति?

उनटा-पुनटा

सबरी मायक सिनेह उनटल छन्हि,

पनटि गेल छथि- तात राम

तियागक मूरति सिया बदलि गेली

प्रति झण बदलए आठो-याम

बोतल क्षीरमे नेना उबडुब

पुष्ट वक्षक लेल अंबा अंध

टॉप पहिरलनि यशोदा मैया

कान्हा हेरथि आँचर गंध

कक्का दलानपर रसमंजरि लागल

पढ़ि-लिख पूत भेलनि अधिकारी

घूसक टाकासँ दलानकँ छाड़ब

लालबत्ती बरू भऽ जाउ कारी

अन्न-पानि बिनु बाबा मुइला

भीठ बिका हेतनि वृषोत्सर्ग

सभ बौराएल यशोगान लेल

गजिया शीत तप्पत अपवर्ग

नांगरक चार चुआठ बनल

तिरपित झाकँ भेटलनि शमियाना

गोदानक संग जौं साँढ़ नै दागब

लोकवेद सभ देत ताना

पहिल छायामे हमरो भेटल

राहरि दालि संग वासमती

बाबाकँ जौं एहिना खुआबितियनि

एखन नै जेता छल तट वागमती

छोट परिवारक लेल मामी माहुर

कात भेली नानी बनि अपरतीप

आर्य भूमिमे मिझा गेल अछि

संयुक्त परिवारक खहखह दीप

सुकेश्वर रामक गाराक कंठी

हाथ धएने धर्मक पतवार

अपैत कुलमे जन्म की भेलनि?

माथ लिखयलनि जाति चमार

सुरावोरि मुर्गी टांग चिबाकऽ

विविध कुलक्षणक संग राति बिताबथि

पंडित वंशक कठुआएल पौरूष

मास्टर साहेब ब्राह्मण कहाबथि।

कविक कामना

पूत बढ़बैछ वंशक मान

मुदा पिपरौलिया बाबासँ

मंगलनि पोतीक रूपमे सुकन्या

अचा अपर्णा वा भव्या

कवि बनि गेला पितामह

सफल भेल कबुला-पाती

भगवत कृपा देख-

खुशीसँ फुललनि जीर्ण छाती

जेठका जीवन झखरैत पाषाण

वियाहक भेल सोलहम बरख

एखन धरि- नि:संतान

दोसर निष्कपट बुड़िवक

परंच पितृसेवक अविराम

करची सन लकलक काया

रंग धन इव श्याम

घनश्याम कनियाँ कोरमे

सद्य: अएली वैदेही बनि कन्या

कविक उपवन भेल धन्या

मुदा! साक्षीक पिताक स्थान

जेठके कँ भेटत

श्यामकँ जौं छन्हि बाप कहएबाक

सख आश वा दीर्घ पियास

दोसर बेटीक लेल

राखथु एकादशी उपास

यएह भेल

कवि गेला स्वर्ग

भेटलनि मुक्ति भेलनि अपवर्ग

साक्षीक माताक कोरमे

फेर बेटी बनि अएली भारती

विचित्र अन्हेर

प्रकृतिक फेर

अङने अङने अड़ए लागल

गप्प हरबिड़रो

बरसए लागल कनफुसकीक झाँट

अपने हाथसँ कविजी

रोपलनि बबूरक काँट

बड़की काकी दिअ लगलनि तान

नै छलनि हुनका संसारक ज्ञान

कबुलामे किएक मंगलनि बेटी

हम जौं हुनका स्थानपर रहितियनि

तँ जनमितहि दाबि देतौं

ऐ राक्षसनीक घेँट

बेटीक लेल प्रार्थना!

आश्चर्य केहन कविक कामना

एकबेर आर अन्हेर

भादवक अन्हरियाक फेर

स्तब्ध छथि सभ केओ

देख कवि कुलक दशा

आङनक बहुआसिन सभ

टोलक अनन्या

कपार पिटए लगलथिन

छोटको पुतोहुक कोरमे

जनमलि... कन्या

हा भगवान महात्माक यएह मान

मङने देलियनि तीन

पुष्प माल लागल फोटोमे

कवि छथि मुग्ध तल्लीन

जेना कहि रहल होथि

के रखलक जहानक मान?

के बढ़ेलक कुलक सम्मान?

के बचेलक वंश

सीता अहिल्या सावित्री

वा रावण कौरव कंस?

मुरूदा जगाउ

इजोतमे तँ सभ चलै छै

अन्हारमे चलि कऽ देखाउ

स्वान सुनि पदचाप जागय

चचरी चढ़ल मुरूदा जगाउ

नृपक मीठ दर्द सुनि बौराएल

पटरानी-मंत्री-सेनापति-चाकर

ओइ अभागल दिस के तकलकै

जे सर्वविहीन जकर देह जर्जर

भरल पेट हाफी करैत

पहुँचल महाजन दुआरि जखने

स्वार्थक दुग्धसँ बनल पयस

भरि थारी आगाँ रखलौं तखने

आँत चटचट कंठ सूखल

पानि नै जे घोँटि पाबय

सुक्खल अछोप मध्यम जनकेँ

झाँटि ‘चंडाल’ कहि भगाबए

देवध्वनिमे निपुण वाचक

पंचतत्व देहे भरल छै

पिरही नै केओ दैत ओकरा

छुद्र कुलमे ओ जनमल छै

देव धर्मकेँ पीस रहलै

झपटल सोन बोरि कऽ बटोरल

केहेन विकराल मृगतृष्णा ई

सभ घोंटि उन्मत्त जहर घोरल

अंतिम आग्रह थिक सुनू बौआ

ऐ फेरमे कखनौं परब नहि

अपना संग सभकेँ जगाएब

कुमार्ग कहियो धरब नै।।

अस्तित्वक प्रश्न?

ककरासँ कहबै के पतियेतै अपने तरंगमे भीजल दुनियाँ

बड़ अथाह स्वार्थक अर्णव ई शुभ बनि गेलै लोलुप बनियाँ

शोणित बोरि-बोरि टाट बनएलौं

खर खोड़ि टिटही लऽ गेलै

फाटल आँचरसँ कोना कऽ झँपबै

खाली चिनुआर बेपर्द भऽ गेलै

व्याल दृष्टिसँ राकस गुड़कए चिहुकि-बिचुकि कऽ कानए रनियाँ

कर्मक नाहमे भेलै भोकन्नर

वामे हाथे पानि उपछलौं

भदवरिएमे पतवारि हेराएल

दहिना हाथक लग्गा बनएलौं

सभटा आङुर पानि खा गेलै, कोना बजतै दर्दक हरमुनियाँ

कछेरमे विषनारि उगल छै

थलथल पाँक पएर धँसि गेलै

अन्हार मोनिमे कछमछ कऽ रहलौं

बिनु जाले टेंगड़ा फँसि गेलै

कोना कऽ हमरा बाहर करतै नोर चाटि हहरए सोनमनियाँ...

किछु छिद्दीक तरमे दबि कऽ

पंद्रह आना अकसक कऽ रहलै

भारी भेल कुकर्मक सोती

ओकरे धारमे गंगा बहलै

घनन दरिद्रा तांडव करतै,

अस्तित्वक- प्रश्न बनल पैजनियाँ...

क्षणप्रभा

सभ दिस सर्द

कियो नै बेपर्द

देह सिहकल रेह ठिठुरल

पोखरि-इनार ठमकल

पूस रमकल

श्याम असर्ध शीतक बीच

टक टक कएने आश

कखन भरत मोनक पियास

कबदबैत चम्पा मुस्कैत पलाश

सूर्यमुखीक दशा देखि

ओकरासँ किअए करैत छी सिनेह

जे कुन्तीकेँ ठकि लेलक

ओकर कौमार्य नष्ट कऽ देलक

आइ आगिक ढेपपर

के करत विश्वास?

झाँपू मर्यादा बचाउ गेह

भावक आगाँ प्राप्तिक कोन मोजर

एतबेमे मेघ उड़ि गेल

शीत लुप्त भेल

क्षणप्रभा बनि रविक अर्चिस

सूर्यमुखीक,

कोमल कोंपरमे समा गेल

ज्योतिपुंजकँ आदित्यक चरण मानि-

सूर्यमुखी अपन सेंथुमे

भस्मीभूत कऽ लेलीह

अखण्ड सौभाग्यवतीक आशीषक संग

किरण ससरल

कली फूल बनि पसरल

हम तँ उभय लिगी छी

नै रहितौं तैयो करितियनि

सुरूजसँ प्रेम......

सभ किअए दैत छी हुनकापर दोख

ने डूमैत छथि ने उगैत छथि

सभ पिण्ड घूमि-

हुनकापर डूमि जएबाक

कलंक लगबैत अछि-

जखन अपनामे दृढ़ता नै

तँ दोसरपर दोष केहेन?

बिनु बजौने सभ लग अबैत छथि

आठो याम जरैत छथि

कुन्ती सभ जनैत किअए

कएली वरण-

ज्योजिपुंजकेँ बान्हब

ककरासँ भेल संभव?

आदित्य सिनेहक तापस

लगले तप्पत, लगले विद्रूप

कोना भेला छलिया?

सिनेहक अर्थ सुधि प्रभंजन

नै स्पर्श

एकर नै अवसान

नै उत्कर्ष...

क्षणप्रभा जकरापर खसल

ओ जरल ओ मरल

मुदा! सिनेहक क्षणप्रभा

वासना मात्र नै-

शाश्वत स्पंदन...

जकरामे केलक प्रवेश

ओकरा रोम-रोम शेष-अशेष

एकर भंगिमा वएह कहत

जकरामे संवेदना रहत....।

सगर राति दीप जरय

राति माने कारी पहर

गत्र-गत्र शांत

जीव अजीव आक्रांत

रजनीक लीलासँ

क्षणिक बचबाक लेल

लोक जरबैछ दीप

सभ्यताक विकासक संग-संग

मनुक्ख चेतनशील होइत गेल

पहिने इजोतक लेल...

खर-पुआर जारनि

लत्ता नूआ फट्टा

सूत छोड़ि रूइयाक बाती

ढिबड़ीक बदला लेम्प

बहकैत रोशनीमे गबैत पराती

बुइधिक विकास भेल...

विद्युत तरंगमे

गैसक उमंगमे

विज्ञानक जय भऽ गेल...

सभ ठाम इजोत

मुदा! वैदेहीक घर अन्हार

मात्र लिखते रहब

ककरोसँ नै कहब

के बूझत कथाक विकास

ककरो नै छल आभास

दधीचि बनि साङ्ह लेने

आबि गेलनि

मैथिली कथा जगतमे प्रभास

सुरुज दिन भरि अपन

करेजकेँ जड़ा कऽ

नै मेटा सकल

ऐ वसुन्धरापर सँ

विगलित मानुषक प्रवृत्ति

प्रभास दीप बारि

अपन करूआरि सम्हारि

कथा सागरक जमल तरंगमे

दिअ लगलनि हिलकोर...

समाज जागत- ई छल विश्वास

मुदा नै आदि भेटलनि

नै भेटलनि छोर...

किनछेरिपर अपसियाँत

कथाकार लऽ लेलनि निर्वाण

जागरणक आशामे

कहियो तँ सुखतनि

वैदेहीक झहरैत नोर...

चलि गेला अभिलाषा लेने

उत्तराधिकारी सभ खेलाइत छथि

अट्ठा बज्जर करिया-झुम्मरि

उद्यत छथि अधिकार हरबाक लेल

पाग पहिरबाक लेल

सगर राति दीप जरय...

रमण रमानन्द- आनन्द विभूति

गेरुआ गर लगौने छथि

मलंगिया महेन्द्र

मसनद पजिऔने छथि

समालोचक- उद्घोषक सूतय

मात्र वाचक मंच चिकरय...

कहैत छथि बुढ़ छी

तखन गोष्ठीमे आबि

नाटक करबाक कोन प्रयोजन?

दीप बारि दुआरि नै जराउ

जे जगदीश जागल रहत

ओकर गामक जिनगी के सुनत?

ओ अछि समाजक कात

कहियो होमए देब

ओकर साहित्य साधनाक प्रभात

किएक तँ ओ थिक वेमात्र

जइ माटिक अन्हारकेँ

सुरुज नै हटा सकल

ओ केना हटत माटिक दीपक बल...?

जौं दृष्टिकोणमे रहत छल

तँ विवेक केना निर्मल?

ओइ कठकोंकारि सबहक बीच

मैथिली छथि दुबकल

सगर राति दीप जरय

अन्हार घर संस्कार सड़य

कथासँ केना पारस निकसय...?

कर्मयोगी

ने भगता योगी आ ने डलबाह हरखक तरंग नै,
नै विपत्तिक आह पहिलुक दर्शन कहिया भेल नै
अछि मोन जहियासँ देखैत छियनि वएह गंभीर मुस्की ..
ककरो उपहास नै ककरो परिहास नै, नै
ठोरपर वसन्तक गान नै
हिअमे ग्रीष्मक मसान
नेना सभक प्रिय अध्यापक कर्मयोगी-
अपकल कोना भेलनि पितामह चूकि?
रीतिक कालपुरुखक नाओं- कामदेव!!!
कोनो नै काम भलमानुष निष्काम
तेसर पहरक विझनीक बाद
जगतधात्रीक नित्यक दर्शन
तामझामक गाममे रहितो
त्रिपुंडसँ मुक्त छुच्छेक हाथे
तर्पण आब की मंगैत छथि बाबा?
झबरल आंगनमे शक्ति सहचरी
जाइ रवि-शशिक किरणकेँ आत्मसात
करबाक लेल लोक करैछ अनर्गल प्रलाप
व्यर्थ कुटिचालि रचैछ
चोरि कऽ आडंवर करैछ
तनयक रूपमे ओ दुनू
बाबाक आंगनक श्रवण कुमार
"अचला" चंचला बनि देलनि
कन्याक उपहार
दु:खक सोतीमे जखन अकुलाइत
छैक मनुक्ख तखन आस्तिककता जगैछ
भूख मुदा! तिरपित बाबा नै करैत छथि
भगवानसँ छल, सुधामे जल मन निरमल....
समाजमे छन्हि शीतलताक आह

सदेह कवि नै तखन वैदेहीक चाह?
अपने नेपथ्य मे रहि
नाटकक कएलनि निर्देशन
देसिल वयनाक प्रति कर्मक गति अर्पण
एकाध प्रहसन लिखि अकथ्य कविता गढ़ि
कतेक आजाद भऽ गेल चिन्हार मुदा!
इजोतक स्त्रोत तक पिरही अन्हार
कोनो नै छन्हि छोह सबहक
उत्कर्ष हुअए यएह आश,
यएह मोह की ब्राह्मण की अछोप
की धानुक की गोप सबहक बाबा......
जइ गाछक छिऐ छाहरि वएह उतुंग
वएह श्रृंग सिक्कठि हुअए वा नरकटि
स्वीकार करैए पड़तनि समाजकेँ
बाबा सन चेतनशील मनुक्ख केँ
जे संस्कार लुटाबए सबहक कल्याणक लेल
अन्तर्मनसँ सोहर गाबए...।

एकटा छली आरती

एकटा छली आरती

भदेसक भारती

आगाँ 'राय' की लागल

ओ सभ बूझि गेलथि

किछु आर

विद्रूप वा होशियार

छलनि खड़ाम देबाक आश

भदेसक कांता

महा भदेसमे छथि-

हुनका पड़ाइन लागि गेल छन्हि

आन किएक जाएत

केना पड़ाएत

किन्नौं नै होमए देलक

मुक्तक काव्यक आश पूर

केओ नै गेल भागलपुर

आरती रूसि गेली

क्षणिक नै

अन्तर-आत्मासँ हुसि गेली

मुँहजोड़ भाषामे

जे राखत आत्मासँ

विदेह-तनुजासँ सिनेह

आत्मासँ गेह

सबहक हएत वएह दशा

भोगए पड़तनि

उत्तराधिकारीकेँ क्लेश

सभ दिनक लेल बिला देतनि

जहानसँ भगा देतनि

मात्र हमहीं टा नाचब

हमहीं देखब

के सूतल के जागल

के नै बूझय

जे करत प्रयास

ओ भऽ जाएत अभागल

ऐ माटिसँ उपटल वैदेहीकेँ

आन भूमिक लोक

माटिमे मिला देलनि

मुदा अपन आरतीकेँ

अपने साङ्ह खसा देलकनि.....।
(लेखिका आरती कुमारी लेल)

मिथिला-पुत्र

मिथिलाक बेटीकेँ सहए पड़लनि

झमेलिया बिआहक दंश

सतभैंया पोखरिसँ पंचवटी धरि

किसुन तकलौं

कतहु नै भेटल

सभ राकश सभ कंश

नअ मास नहि

पैंसठि बरख धरि

मयना उठबैत रहलीह

प्रसव वेदनाक टीस

तखन जा कऽ भेल

जीवन संघर्षक जीत

दिवसेमे तरेगन बहकल

विदेहक आङन जनमल जगदीश

मौलाइल गाछक फूल गमकल

तापसमे भैंटक लावा चमकल

पूर्वाग्रहक चपेटिमे

जाति-पजातिक गेठमे

ओझरा कऽ मैथिली

भऽ गेल छलि निर्मूल

बेदम्म गजेनक आश जागल

सुखैत गुल्लरिमे फूल लागल

रमकल जिनगीक जीत

वैयक्तिक नै-

पसिझैत गामक जिनगी

मात्र मेंहथ आ बेरमा नै

मौरंगसँ सिमरिया धरि

चमकि उठल इंद्रधनुषी अकास

केकरो नै छल विश्वास

द्विजक मुरदैयाक संग-संग

अछोपक सोती बहत...?

स्वाभाविक छल उपहास हएब

मुदा! तिरस्कारक क्षोभ नै

जीवन-मरण तँ प्रकृतिस्थ लीला

तखन केकरोसँ केहेन द्वेष?

अवतारवादक सेहो होइछ पराभव

केओ पनही देत की नै

कोनो तृष्णा नै

नै उत्थानक आश

पतनसँ घृणा नै

अकाल भेल तँ बिसाँढ़ चिबा कऽ

राति-दिन समरसता दीप

जड़बैत रहल

अपन गीतांजलि गाबि

कम्प्रोमाइज करैत रहल

कोनो कलुष कम्प्रोमाइज नै

गत्र-गत्रमे समन्वयवाद

कलमे टा सँ नै

जीवन दर्शनमे सेहो

चलि गेला भोगेन्द्र

नै तँ उत्तर भेटि जइतए

यात्री, आरसी आ फजलुरसँ

सेहो कोनो तुलना नै

आन इचना-पोठीक कोन गप्प

लोक चानी नै टलहा कहए

विज्ञ नै बुड़िबक बूझए

संस्कार नै छोड़ब

खाँटी किसान मजदूरक रूप

ब्रह्म बेलामे कलम खियाबथि

सरल धवल बेरमाक भूप

एहन साम्यवादी-

फाँसीपर चढ़ि जाएब

मुदा बटोहीकेँ अधलाह

बाट नै देखाएब

केकरो नै सुनलक

संततिक कोन कथा

अर्द्धांगिनी सेहो सहैत रहलीह

ऐ लेलिनक सेहो देल ब्यथा

ने केकरो तर करब

ने केकरोसँ ऊपर जाएब

सबहक शोणित एक्कहि रंग

कएलक विरोध व्यवस्था बेढंग

मरल गरीबक बाप मुदा की

पुरहित-पात्रकेँ भरिगर चाही

धूर-धूर बास बिका गेल

काहि काटि लुटबैत बाहवाही

लेस मात्र नै दया अग्रजकेँ

सिहरि-सिहरि अश्रु-उच्छवास

कहियो नै अगिला पएर पुजाबथि

कतए राम धर भूत पिशाच?

सभा बजौलनि धानुक टोलक

अपनहि जातिमे पंडित देखू

भाँज पुराएब जटिल कर्मकाण्डक

माइक समान नै धरती बेचू

मात्र बाटपर आनय खातिर

करै छथि प्रतिक्षण सामन्त विरोध

सम्यक समाज मिथिलेमे बनतै

जगा रहलाह समभाव बोध

अक्षेपसँ नै गंग छुआबथि

तखन केना कऽ हाड़ छुआइत

मन: दीपसँ हियमे तकबै

मिथिला पुत्रक स्पन्दन हएत...।

(श्री जगदीश प्रसाद मण्डल जीकेँ समर्पित..)

सुखार

काल रहसल त्रास बहकल
मधुमासे संत्रास महकल
अषाढ़ कुपित इन्द्र रूसल
जल बुन्न बिनु बिआ विहुसल
आड़ि चहकल खेत दड़कल
प्रशान्तक प्रकोपे मनसून सरकल
शोषित कलकल जुआनी गरकल
रोहिणी-आरदरा सुखले रमकल
"ग्लोबल-वार्मिग" फनकल
क्षुब्ध प्रकृति सनकल
विज्ञानक चमत्कारमे उच्छ्वास छनकल
गाछ काटि फोर लेन बनेलौं
पहिने किअए नै नवगछुली लगेलौं
अपने गतिक स्टेयरिग पकड़लौं
मजूर किसानकँ घर बैसेलौं
कृषि प्रधान देशमे नोरक स्नात
आँखिक शोणितसँ केना भीजत पात?
ऐ बेर सुखाड़ साउनो बीतल
दीनक आत्मा तीतल
भदैया बूड़ल रब्बीक कोन आश
सुक्खल मुरदैया मरूझल कास
अगिला साल आओत बाढ़ि
देलौं खेतिहरकँ ताड़ि?
वाह रौ विज्ञान वाह रौ धनमान
बिनु हथियारें लेलें गरीब-गुरवाक जान
जकर भऽ सकए संलयन आ विघटन
आयुर्वेदमे तइ रसायनक चर्चा
विज्ञानक बाढ़िमे सगरो पॉलीथीन
कागत छोड़ि बाँटि रहलौं प्लास्टिकक पर्चा

आजुक रसायनसँ माटिक कोखि उजड़ल
ठुट्ठ डाँट किछु नै मजड़ल
प्लास्टिक छोड़ि लिअ जूटक बोरा
पॉलीथीन नै ठोंगा-झोरा
छोड़ रौ धनचक्कर
एडभान्स बनबाक चक्कर
पकड़ैँ अपन बाप पुरुखाक देल हथियार
धरे मौलिक संस्कार
केमिकलसँ नहा तँ लेबें
मुदा! की चिबेबें....?

गजल १

कालरात्रिमे महमह दिनमान कोना आएत
मोनमे पाप झबरल भगवान कोना आएत

नहि जड़ै प्राण वायु मरल सरल देह संग
अधम नीचाँ खसत धर्म गगनमे बिलाएत

माँझ आंगन काँटक बोन नहि रोपू प्रियतम
काग कोइली सन कोमल संतान कोना पाएत

विरह मासमे ने सोहर सोहनगर लगै छै
कंठमे पित्त चभटल मधुगीत कोना गाएत

अपने करू रास लीला नेना दूध बिनु कानए
कर्मभीरू पुरुखकेँ जयकार कहेन हाएत

गजल २

कहू की बात हम मानिनि कलुष भऽ गेल अछि अर्पण
कोना सहबै अखल कंटक दबै छै टीसतर तर्पण

सोहाबै नै खुशी सरगम समाजक हास परिलक्षित
धुनै छी देल कालक गति गदराबै नै विकल जीवन

पतित नियति आकुल भेलै जड़ल अर्णव तरंगे छै
सूतल ईश सभ पंथक एलै समभावमे विचलन

बाहरसँ जे जत्ते गुमसुम हिआसँ ओ ओते बिखधर
चानन बहलै उषाकाले वाह रौ जहानक संकर्षण

भेटल जेकरा जतऽ अवसरि हाथ धोलक हलालीसँ
नीतिक मंचपर चढ़िते करै माटि नेह प्रति गर्जन

हाइकू

सूतल जग/ दिनकर लालिमा/ जगा देलक

रविक लाली/ /ऐ सूतल जहाँकेँ/ जगा देलक

बर्खाक बाद/ खहखह पाइन/ वसुधा तृप्त

शिव कुमार झा, पिताक नाम : स्व. काली कान्त झा ''बूच'',माताक नाम : स्व. चन्द्रकला देवी,जन्म तिथि : 11-12-1973,शिक्षा : स्नातक (प्रतिष्ठा),जन्म स्थान : मातृक : मालीपुर मोड़तर, जि.-बेगूसराय,मूलग्राम : ग्राम + पत्रालय - करियन, जिला समस्तीपुर। संप्रति : प्रबंधक, संग्रहण, जे. एम. ए. स्टोर्स लि., मेन रोड, बिस्टुपुर, जमशेदपुर। अन्य गतिविधि : वर्ष 1996 सँ वर्ष 2002 धरि विद्यापति परिषद समस्तीपुरक सांस्कृतिक ,गतिवधि एवं मैथिलीक प्रचार-प्रसार हेतु डॉ. नरेश कुमार विकल आ श्री उदय नारायण चौधरी (राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षक) क नेतृत्वमे संलग्न|